SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

संस्कृत साहित्य और आध्यात्म वाद

सत्यवती चौरसिया
शोधार्थी - संस्कृत
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सार

संस्कृत भाषा प्राचीनतम भाषा मानी जाती है एवं संस्कृत साहित्य और आध्यात्म का गहरा संबंध बताया जाता है। आध्यात्म का जो अध्ययन संस्कृत साहित्य में प्राप्त किया जा सकता है वह किसी विशेष विषय में कर पाना संभव नहीं होता है। अध्यात्म का गहन अध्ययन हम संस्कृत साहित्य में विशेष रूप से वेद, उपनिषद, भागवत गीता, रामायण, महाभारत और वेदांत दर्शन में कर सकते हैं। आध्यात्मिक शब्द का अर्थ आत्मा मां और आंतरिक चेतना से होता है यह जीवन के भौतिक मानसिक और धार्मिक अनुभवों से परे आत्मा और परमात्मा के संबंध आत्मज्ञान मोक्ष और आत्मा की प्रकृति के साथ जोड़ता है। अर्थात आध्यात्म का अर्थ मनुष्य को उसकी वास्तविक आत्मा की पहचान करना और उसे मुखिया पूर्ण मुक्ति की ओर ले जाना है, आध्यात्म वाद न केवल एक धार्मिक सिद्धांत है बल्कि हमारे जीवन जीने का एक मार्ग भी प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द

संस्कृत साहित्य, आध्यात्मवाद, आत्मा, परमात्मा, मोक्ष, आत्मिकता।

प्रस्तावना

आत्मिकता का संबंध आत्मिक सत्यता की खोज से होता है जो मनुष्य को उसकी स्वयं की गहरी समझ और आत्मा के साथ विशेष संबंध को दर्शाती है आत्मज्ञान मनुष्य को उसके अंतिम लक्ष्य मोक्ष तक पहुचाता है अर्थात मनुष्य का अंतिम लक्ष्य सांसारिक सुख सुविधाओं के बंधन से मुक्ति प्राप्त करना आत्मज्ञान से ही संभव हो पाता है। संस्कृत साहित्य और आध्यात्मिक ज्ञान का गहरा संबंध होने के कारण इसमें निहित वेद, उपनिषद, भागवत् गीता, महाकाव्य जैसे (रामायण और महाभारत) एवं वेदांत दर्शन से अध्ययन कर पाना संभव होता है। इस साहित्य में आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष, धर्म और जीवन मूल्य पर गहन चिंतन किया गया है जो आध्यात्मिकता के प्रमुख पहलू माने जाते हैं

1. वेद और उपनिषदों में आध्यात्मिकता - वेद एवं उपनिषदों में ज्ञान का अपार भंडार भरा पड़ा है, इनमें ज्ञान एवं कर्म का अंतिम उद्देश्य छुपा हुआ है एवं मनुष्य को जन्म से लेकर अंतिम लक्ष्य मुक्ति या मोक्ष तक पहुंचाने का सुलभ मार्ग भी बताया गया है। ज्ञान एवं कर्म का अंतिम परिणाम रूप भक्ति और उसे भक्ति के अंतिम परिणाम रूप उन विराट विश्व रूप पुरुषोत्तम की शरणागति को वेद श्रेय मार्ग में महत्वपूर्ण मानते हैं। वेदों में नियत मंत्र इस प्रकार समाहित हैं जो हम मनुष्य को आध्यात्मिकता से जोड़कर हमें मोक्ष प्रदान करने को प्रेरित करते हैं वेदों की मान्यता है कि तप: भूत जीवन से ही हमें मोक्ष की उपलब्धि संभव होती है जैसा कि अथर्ववेद व ऋग्वेद के श्लोक में वर्णन किया गया है-

उलूकयातुं शुशुकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम।
सुपर्ण यातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।।[1]

अर्थात् आध्यात्मिक जीवन से जुड़ने के लिए मनुष्य को मन का क्रोध, मत्सर, काम, मद और लोभ की दूरवृत्तियों से सदैव दूर रहना आवश्यक है। इन छः मानसिक शत्रुओं के निवारण के लिए वैदिक मित्रों से पशु पक्षियों की उपमा से दमन करने की सम्मति दी गई है अर्थात इस मंत्र में मनुष्य को जागृत रहने के लिए प्रेरित किया गया है, और कहा गया है कि हे! मनुष्य! तू साहसी बनकर उलूक के समान 'मोह' भेड़िए के समान ' क्रोध ' स्वान के समान 'मत्सर' कोक के समान 'काम', गरुड़ के समान ' मद 'और 'लोभ' को गिद्ध के समान समझकर मार भगा। इस प्रकार यह कहा गया है कि तू ईश्वर से बल मांग कर इन छह प्रकार की राक्षसी भावनाओं को पत्थर के समान कठोर साधनों से अर्थात ईश्वरीय भक्ति से नष्ट कर दे। संस्कृत साहित्य में उपनिषदों को वेदों का अंतिम भाग माना जाता है जो मोक्ष तक पहुंचाने का अंतिम साधन माने जाते हैं, उपनिषदों के अध्ययन से आत्मा और परमात्मा का साक्षात्कार कर पाना संभव होता है, अर्थात उपनिषदों में आध्यात्मिकता का मुख्य उद्देश्य आत्मा, ब्रह्म के संबंध को समझ कर आत्मा के स्वरूप को पहचान कर मोक्ष प्राप्त करना होता है। जैसे कि बृहदारण्यक उपनिषद् कहा गया है-"अहम् ब्रह्मास्मि" मैं ब्रह्मा हूं। छान्दोग्योपनिषदः में कहा गया है,- "तत्वमसि" अर्थात तू वही है! उपनिषद आत्मज्ञान को मोक्ष का साधन मानते हैं अर्थात आत्मा के साक्षात्कार से ही जीवन मरण के चक्र से मुक्ति संभव होती है। उपनिषदों में ध्यान और योग का महत्व बताकर आत्मा व ब्रह्म का अनुभव किया जा सकता है। निम्नलिखित मत्रों के द्वारा हम आत्मा व ब्रह्म को समझ सकते हैं-

"सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रहा" अर्थात ब्रह्, सत्य, ज्ञान और अनंत है। (तैत्तिरीय उपनिषद)[2]
"आत्मा वै अरे दृष्टव्य:" अर्थात आत्मा का दर्शन ही जीवन का मुख्य लक्ष्य है, (बृहदारण्यक उपनिषद)

अर्थात् उपनिषद् आध्यात्मिकता से हमें निःसंदेह जोड़ने में सहायक हैं।

2. भगवत गीता में आध्यात्मिकता - भगवत गीता भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता का एक महान ग्रंथ माना जाता है। यह महाभारत के भीष्म पर्व का एक हिस्सा है और अर्जुन व भगवान श्री कृष्ण के संवाद के माध्यम से आध्यात्मिकता जीवन दर्शन एवं कर्म योग का गहन ज्ञान प्रदान करती है, इसमें आत्मा, परमात्मा, जीवन के उद्देश्य और मोक्ष के मार्गों का विस्तृत वर्णन मिलता है। भगवत गीता के द्वितीय अध्याय में आत्मा को अविनाशी , अनशवर और शाश्वत बताया गया है। जैसा की निम्नलिखित श्लोक में आत्मा का शाश्वत उल्लेख मिलता है

"न जायते ग्रियते वा कदाचित नायं: भूत्वा भविता वान भूय:। (अध्याय 2.20)[3]

अर्थात् आत्मा न कभी जन्म लेती है और न ही मरती है सिर्फ शरीर नष्ट होता है क्योंकि आत्मा अमर व अविनाशी है। भगवत गीता में आध्यात्मिकता के मुख्य तत्व आत्मा का ज्ञान ,परमात्मा का स्वरूप कर्म योग ,भक्ति योग ,ज्ञान योग ,सांख्य योग ,साम्यभाव, मोक्ष मार्ग आदि का सम्यक ज्ञान समाहित है, अर्थात भागवत गीता केवल धार्मिक ग्रंथ न होते हुए संपूर्ण मानव जाति के लिए आध्यात्मिक प्रकाश स्तंभ है।

3. महाकाव्य में आध्यात्मिकता - भारतीय महाकाव्यों विशेष रूप से रामायण और महाभारत में आध्यात्मिकता का बहुत बड़ा स्थान है यह महाकाव्य केवल कथा एवं इतिहास ही नहीं बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाले गूढ़ आध्यात्मिक संदेशों से भरे पड़े हैं। महाकाव्य जैसी रामायण और महाभारत जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन की ओर प्रेरित करते हैं। महाकाव्य में आध्यात्मिकता के संजीव दर्शन देखने को मिलते हैं जैसे बाल्मिक रामायण केवल एक कथा ही न होकर इसमें हमें आदर्श जीवन के दर्शन भी होते नजर आते हैं इसमें श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया है जो आत्म संयम कर्तव्य और भक्ति का आदर्श प्रस्तुत करते हैं सीता का धैर्य और त्याग भक्ति और समर्पण का स्वरूप है। आज वर्तमान पीढ़ी को यह महाकाव्य का पठन-पाठन अवश्य करना चाहिए और उनके पथ पर अग्रसर होकर नैतिक एवं आध्यात्मिक

स्वरूप को पहचानना चाहिए। सीता के त्याग धैर्य को आज की नारी को अपने आचरण एवं जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में ढालने की आवश्यकता है। महाकाव्य में आत्मा और परमात्मा की एकता को समझाने पर विशेष बल दिया गया है विभिन्न ऋषियों मुनियों ने तपस्या या साधना के द्वारा आत्मा के स्वरूप को समझा है।

4. पुराणों में आध्यात्मवाद - संस्कृत भाषा में पुराण शब्द का अर्थ है" प्राचीन या पुराना"। "पुराणं पौराणिकं चैतिहासं च पुरातनम्" अर्थात् पुराण प्राचीन घटनाओं और धार्मिक ज्ञान का संकलन है, जिसमें पुरानी कथाएं या पूर्ण ज्ञान निहित है। पुराणों में आध्यात्मिक ज्ञान मुख्य रूप से भागवत पुराण में भक्ति और आत्मा- परमात्मा के संबंध का गहन विवेचन मिलता है। इसमें श्री कृष्ण का जीवन प्रेम और भक्ति का स्वरूप है एवं गोपियों की भक्ति आत्मा और परमात्मा की मिलन का प्रतीक है। पुराणों में मोक्ष की प्राप्ति के लिए भक्ति, ज्ञान और कर्म मार्ग की सिद्धि को दिखाया जाता है। गरुड़ पुराण में आध्यात्मिक जीवन के मार्गदर्शन को महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें भगवान विष्णु और उनके अवतारों की भक्ति को सर्वोपरि माना गया है। गरुड़ पुराण में धर्म ,आध्यात्मिकता, मोक्ष ,जीवन के मार्ग, प्राणियों के कर्म और उनके फल के बारे में विस्तार से बताया गया है।

5. वेदांत दर्शन में आध्यात्मवाद - वेदांत का अद्वैत वेदांत सिद्धांत जिसके प्रणेता आचार्य शंकराचार्य हैं इन्होंने इस सिद्धांत में आत्मा और परमात्मा(ब्रह्म) के बीच संबंध को बताया है। इस सिद्धांत में आत्मा की दिव्यता और ब्रह्म के साथ उसके एकत्व पर जोर दिया जाता है। इस सिद्धांत में आत्मा का परमात्मा में विलीन होना ही मोक्ष प्राप्ति का साधन बताया गया है। वेदांत के अनुसार आत्मा शाश्वत और निर्मल होती है। वेदांत में ब्रह्म को निराकार माना गया है, वहीं दूसरी ओर माया को संसार की अस्थाई और भ्रम पूर्ण प्रकृति के रूप में बताया गया है। माया रुपी पर्दा के हटते ही हमें ब्रह्म का वास्तविक रूप प्राप्त होता है एवं आत्मज्ञान से व्यक्ति माया के प्रभाव से मुक्त हो जाता है, यही मुक्ति मोक्ष का मार्ग मानी जाती है। यही संसार के सभी बंधनों से परे होती है, वेदांत में ज्ञान, विवेक और वैराग्य जैसी महत्वपूर्ण साधनाओं के माध्यम से व्यक्ति आत्मा के वास्तविक रूप को पहचान कर ब्रह्म के साथ एकत्व का अनुभव कर सकता है।

निष्कर्ष

संस्कृत साहित्य में अध्यात्म का सुक्ष्म वर्णन किया गया है इसमें निहित पुराण, रामायण एवं महाभारत जैसे विशाल ग्रन्थों में अध्यात्म का प्रत्येक पक्ष प्रतिबिंबित किया गया है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य आत्मज्ञान एवं संचारिक बंधनों से मुक्ति पाना है अर्थात मानव देह की नश्वरता एवं मृत्यु की अनिवार्यता के संदर्भ में कहा गया है कि-

सर्वे क्षयंता निचया: पतनान्ता: समच्छया:।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम्।।[4]

अर्थात् इस श्लोक में मृत्यु को अवश्यभावि माना गया है, जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु भी निश्चित है चाहे वह ईश्वर तुल्य क्यों न हो रामायण एवं गीता में राम एवं कृष्ण भी जन्म लेकर मृत्यु को प्राप्त हुए अर्थात् आत्मज्ञान का होना परम आवश्यक है। जन्म व मृत्यु के चक्र को समझना बगैर आध्यात्म के संभव नहीं है। अतः देह या शरीर के नश्वर होने पर हमें दुखी नहीं होना चाहिए। संस्कृत साहित्य का अनुशीलन करने पर यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि समस्त मानव जीवन का परम लक्ष्य परमात्मा ही है। यह जगत मिथ्या है आधुनिक, भौतिक जगत की चकाचौंध से अभिभूत होकर मनुष्य आध्यात्मिक ज्ञान से वंचित है और वह इस जगत् को सत्य समझ बैठता है। इस मिथ्या जगत् को जानने के लिए आध्यात्म ज्ञान ही एकमात्र ऐसा साधन है जो मनुष्य को कर्म बंधनों से विमुक्त करके परमात्मा के स्वरूप से अभिभूत करवाने में सहायक सिद्ध होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. श्रीमद्भागवत पुराण, 11/03/38
2. मनुस्मृति, 06/80-82
3. महाभारत, भीष्म पर्व 33/28
4. महाभारत शांति पर्व, 194/6-7
5. "आध्यात्म रामायण", आदि शंकराचार्य, भूमिका से
6. ईशावास्योपनिषद, 01